प्रोत्साहन में बड़ी शक्ति है

महाभारत के युद्ध की तैयारियां जोरो पर थी । कौरव और पाण्डव दोनो ही अपने पक्ष को मजबूत बनाने, राजा-महाराजाओं के पास जाकर उनका सहयोग मांग रहे थे । समर्थन की दृष्टि से कौरवों का पलड़ा भारी था, क्योकि दुर्योधन ने वाकपटुता, साम-दाम, दंड-भेद, चातूर्य से अधिकांश राज्यों को अपने वश में कर लिया था । महाबली शल्य भी दुर्योधन की वाकचातुर्य के फंदे में फंस गए और बाहरी रूप से उन्हें समर्थन कौरवों को ही देना पड़ा । यघपि वे जानते थे कि कौरवों का पक्ष अन्यायपूर्ण है, पर वचनबद्ध हो जाने के कारण शल्य को दूर्योधन की ही बात रखनी पड़ी । महाबली शल्य ने युद्ध करने के स्थान पर वीर कर्ण का सारथी बनना पसंद किया ।

दुविधा में फंसे शल्य, अर्जुन के सारथी बने श्रीकृष्ण के पास गए और पूछा - भगवन ! वचनबद्ध हो जाने के कारण मैं दूर्योधन की सेना में हूं, लेकिन मेरा ह्रदय पश्चाताप से जल रहा है । ऐसा कोई उपाय बताइए, कि मैं अपने वचनों की रक्षा भी कर सकूं और अन्याय का साथ भी ना दूं । श्रीकृष्ण बोले - तुम कर्ण का रथ हांक रहे हो । निःसंदेह कर्ण जैसे शुरवीर के सामने टिकने में अर्जुन को बहुत मेहनत करनी पड़ेगी । अतः तुम युद्ध में कर्ण को निरूत्साहित करते रहना । निरूत्साहित व्यक्ति की आधी क्षमता स्वंय ही समाप्त हो जाती है ।

युद्ध में शल्य ने ऐसा ही किया । अर्जुन को सामने देखकर कर्ण ने जब उसे ललकारा और चुनौती दी, तो शल्य हंस पड़े । कर्ण ने आश्चर्य चकित होकर, उनके हंसने का कारण पूछा तो शल्य ने कहा-तुम जानते हो, कि अर्जुन ने इन्द्र से युद्ध करना सीखा है और भगवान शंकर से धर्नुविघा । तुम उसे क्या हरा पाओगे ? कर्ण का आधा उत्साह वहीं ठंडा हो गया । उधर कर्ण को सामने देखकर, अर्जुन विचलित हो गए तो कृष्ण ने उन्हें साहस बंधाया और कहा - तुम जानते नहीं कि कर्ण को शंकर का श्राप है कि अन्य वीरों के लिए भले ही वह अजेय हो, लेकिन अर्जुन के सामने उसकी धर्नुविघा कोई काम नहीं आएगी ।

भगवान कृष्ण से यह बात सुनकर अर्जुन ने पूर्ण उत्साह और हिम्मत के साथ, कर्ण के आक्रमण का करारा उत्तर दिया । उधर बारम्बार शल्य कर्ण को हत्तोत्साहित ही करते रहे । पहली बार मिली असमर्थता ने कर्ण की शक्ति एक चौथाई कर दी और इतिहास गवाह है, कि अंत में कर्ण को अर्जुन के हाथों परास्त होना पड़ा । भले ही हम उसे श्रीकृष्ण की कूटनीति कहें, लेकिन यह सत्य है, कि प्रोत्साहन में बड़ी शक्ति है ।

एक अच्छे मैनेजर को अपने सहयोगियों और साथियों को उत्साहित करने की सामर्थ्य होनी चाहिए । जब संकटपूर्ण स्थिति में कोई सहयोगी अपनी कमजोरी से उत्साह छोड़ निराश हो जाता है, तब एक कुशल मैनेजर उनकी वास्तविक आंतरिक शक्ति को जगा कर और उनके गुणों का बखान कर उन्हें साहस बंधाता है । एक अनुकरणीय व्यक्ति संकट के समय अपने अपूर्ण साहस से हारने की संभावना से ग्रस्त अनुयायियों को, विजय का मार्ग दिखाकर, निश्चित रूप से उन्हें विजेताओं के रूप में परिवर्तित कर देता है ।

वर्षा अजीत वरवंडकर
फाउडेशन सर्विसेज
रायपुर